Gd – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया
मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३a | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३ए

खोदाई: जब नौ प्रेरित राक्षस को बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे तो यीशु कहाँ थे? इसने उनकी हताशा में कैसे योगदान दिया? लड़के के पिता के रूप में, बहस के दौरान आपको कैसा महसूस होगा? इस मुठभेड़ और रूपान्तरण के बीच का अंतर प्रभु की शिक्षा को कैसे दर्शाता है? भीड़ के पहुंचने से पहले यीशु ने लड़के को ठीक क्यों किया? उपचार के बाद, मसीह अपने प्रेरितों को क्या सिखाता है? मुहावरा क्या दर्शाता है: इस तरह का . . . केवल प्रार्थना और उपवास से ही बाहर आ सकते हैं मतलब? इस शिक्षण का क्या महत्व है?

चिंतन: आपके जीवन में कब एक गौरवशाली पर्वत शिखर के अनुभव के बाद एक निराशाजनक घाटी की घटना घटी? जिससे आपका विश्वास और अधिक बढ़ता है? आप अपने जीवन के किन क्षेत्रों में अधिक विश्वास देखना चाहते हैं? क्या आप भी कभी-कभी उस लड़के के पिता की तरह महसूस करते हैं जब उन्होंने कहा था: मैं विश्वास करता हूं, लेकिन मेरे अविश्वास पर काबू पाने में मेरी मदद करो? इसका क्या मतलब है? उसने विश्वास किया या नहीं? जब आप इस तथ्य के बारे में सोचते हैं कि जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है, तो कौन सी संभावनाएँ और कौन सी गलतियाँ मन में आती हैं?

सापेक्ष अलगाव की अवधि अब समाप्त हो रही थी। यीशु ने लगभग छह महीने के अनुभवों के माध्यम से बारह लोगों को अपने स्वभाव और अपने राज्य के वास्तविक चरित्र की अधिक गहन समझ के लिए प्रेरित किया था। वह उन्हें अपने मसीहापन और देवत्व में उनके विश्वास की स्वीकारोक्ति के लिए लाया था। अंत में, येशुआ हा-माशियाच अपने वास्तविक स्वरूप की एक झलक पाने के लिए प्रेरितों में से तीन सबसे सुसज्जित और सबसे अधिक आध्यात्मिक प्रेरितों को हर्मन पर्वत पर ले गया, ताकि उनमें निश्चित रूप से आने वाले उत्पीड़न के तहत खड़े होने का साहस हो सके। उसके आने वाले सूली पर चढ़ने का प्रकाश।

दृश्य नाटकीय रूप से महिमा के पहाड़ से निराशा की घाटी में बदल जाता है। मूसा, एलिय्याह और परमपिता परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट मसीहा की जबरदस्त महिमा से, प्रभु के दूसरे आगमन के एक आश्चर्यजनक पूर्वावलोकन से, येशुआ और उसके तीन अनुयायी पापी दुनिया की सबसे खराब वास्तविकता में उतरे। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि परिवर्तन के पर्वत से लौटने पर हमारे उद्धारकर्ता को जिस पहली दुखद स्थिति का सामना करना पड़ा, वह विश्वास के बारे में एक सबक था।

Gd – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया
मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३a | 2

अगले दिन, जब यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना पहाड़ से उतरे, तो कैसरिया फिलिप्पी के पास एक बड़ी भीड़ उनसे मिली। जब वे दूसरे प्रेरितों के पास आये, तो उन्होंने अपने चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखी और टोरा-शिक्षक उनके साथ बहस कर रहे थे (मरकुस ९:१४; लूका ९:३७)। मती या लूका की तुलना में मरकुस के पास इस कहानी का अधिक संपूर्ण विवरण है, और ज्वलंत विवरण पतरस के प्रत्यक्षदर्शी विवरण के इनपुट का सुझाव देते हैं। टोरा-शिक्षक अन्य नौ शिष्यों के साथ बहस कर रहे थे जो पीछे रह गए थे, और एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई थी। चूँकि रूपान्तरण माउंट हर्मन पर हुआ था, फ़िलिस्तीन के उत्तर में अब तक टोरा-शिक्षकों की उपस्थिति ने मनमौजी रब्बी के शिक्षण और उपदेश की निगरानी में उनकी चिंता का चिन्ह दिया।

तर्क का आधार यह था कि नौ शिष्यों ने एक राक्षस को बाहर निकालने की कोशिश की थी, लेकिन वे ऐसा करने में असमर्थ थे। इससे पता चला कि उन्हें अभी भी बहुत कुछ सीखना बाकी है। इस प्रकार, टोरा-शिक्षक अपनी विफलता को सबूत के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे कि यीशु मसीहा नहीं थे। यह संगति द्वारा एक प्रकार का अपराध बोध था। यह टोरा- शिक्षकों के लिए विजय का समय था। स्वामी ने दलमनुथा में चुनौती को अस्वीकार कर दिया था (देखें Fv– फरीसी और सदूकी एक चिन्ह मांगते हैं), लेकिन प्रेरितों ने इसे यहां स्वीकार कर लिया, और बुरी तरह विफल रहे थे।

यह दृश्य हमें जंगल में इज़राइल के प्रलोभन की याद दिलाता है (निर्गमन Gq– स्वर्ण बछड़ा घटना पर मेरी टिप्पणी देखें)। हमें शायद ही आश्चर्यचकित होना चाहिए अगर बचे हुए नौ शिष्यों ने मसीह की वापसी पर सवाल उठाया, जैसे कि इस्राएलियों ने मूसा की वापसी पर सवाल उठाया था। जब लोगों ने देखा कि मूसा को पहाड़ से उतरने में बहुत देर हो गई है, तो उन्होंने कहा: यह साथी मूसा जो हमें मिस्र में ले आया, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ है (निर्गमन ३२:१)।

उसी क्षण, यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ प्रकट हुए। जैसे ही सभी लोगों ने उसे देखा, वे आश्चर्य से अभिभूत हो गए और उसका स्वागत करने के लिए दौड़े क्योंकि वह अब दान से लेकर बेर्शेबा तक प्रसिद्ध था (मरकुस ९:१५)। वह हमेशा की तरह, अप्रत्याशित रूप से, और सबसे उपयुक्त समय पर प्रश्न का उत्तर देने के लिए आये।

वहां तुरंत शांति छा गई। ईसा मसीह ने बचे हुए नौ शिष्यों से पूछा: आप उनसे किस बारे में बहस कर रहे हैं? लेकिन इससे पहले कि वे जवाब दे पाते, भीड़ में से एक आदमी यीशु के पास आया और उसके सामने घुटने टेककर गिड़गिड़ाने लगा: रब्बी, मेरे बेटे पर दया करो, जिस पर एक राक्षस ने कब्जा कर लिया है जिसने उसकी वाणी छीन ली है। लड़के की हालत दयनीय थी और पिता ने एक व्यक्तिगत आवश्यकता व्यक्त की (En– मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन देखें)। उन्होंने समझाया: जब भी यह उसे पकड़ता है, तो उसे बहुत पीड़ा होती है। यह उसे ज़मीन पर गिरा देता है और वह अक्सर आग या पानी में गिर जाता है। उसके मुँह से झाग निकलने लगता है, वह दाँत पीसने लगता है और कठोर हो जाता है (मती १७:१४-१५; मरकुस ९:१६-१८ए)। यह अत्यंत हिंसक दानव

Gd – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया
मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३a | 3

था और एक निराशाजनक मामला प्रतीत होता था।

पिता स्वयं गुरु की तलाश में आये थे, लेकिन उन्हें केवल नौ प्रेरित ही मिले। निस्संदेह उन नौ लोगों को पूरी उम्मीद थी कि वे राक्षस को बाहर निकालने में सक्षम होंगे। क्या यह उनके आदेश का हिस्सा नहीं था (मरकुस ३:१५), और क्या वे पहले से ही इसमें सफल नहीं हुए थे (मरकुस ६:१३)? उन्होंने चमत्कार करने वाले रब्बी को समझाया, “मैंने तुम्हारे शिष्यों से राक्षस को बाहर निकालने के लिए कहा, लेकिन वे उसे ठीक नहीं कर सके” (मती १७:१६; मरकुस ९:१८ बी)। क्या ग़लत हुआ था? उनकी विफलता इस तथ्य के कारण नहीं थी कि यीशु उनके साथ नहीं थे, क्योंकि जब वे पहले सफल हुए थे तो वह उनके साथ नहीं थे। उनके पास अभी भी प्रभु की शक्ति का वादा था, फिर भी वे लड़के को ठीक नहीं कर सके। उनकी असफलता का कारण सरल था। वे अपने पास उपलब्ध बिजली का उपयोग करने में विफल रहे।

प्रेरितों की अविश्वासी नपुंसकता ने न केवल लड़के के पिता को, बल्कि येशुआ को भी दुखी किया। उस व्यक्ति के बजाय प्रेरितों और बड़ी भीड़ से बात करते हुए जिसने अभी-अभी उसका सामना किया था, प्रभु ने शायद स्वयं को उतना ही उत्तर दिया: तुम अविश्वासी और दुष्ट पीढ़ी, यीशु ने उत्तर दिया: मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? यहां गैलीलियन रब्बी हमें अपनी मानवीय भावनाओं और दिव्य आत्मा की गहराई की एक दुर्लभ झलक देते हैं। अनंत काल से स्वर्गदूतों को तुरंत अपनी आज्ञा मानने का आदी होने के कारण, वह एडोनाई के लोगों, इज़राइल, विशेष रूप से उसके प्रेरितों की आध्यात्मिक अंधता पर दुखी था, जिन्हें उसने व्यक्तिगत रूप से चुना था, सिखाया था और अद्वितीय शक्ति और अधिकार के साथ सशक्त बनाया था। इस्राएलियों की सारी पीढ़ी अविश्वासी थी; इस अवसर पर बड़ी भीड़, शिष्यों, और स्वयं-धर्मी टोरा-शिक्षकों का प्रतिनिधित्व किया गया जो प्रभु को फंसाने और बदनाम करने के लिए वहां मौजूद थे यदि वे कर सकते थे।



अगले ही पल मसीह पिता की ओर मुड़े और कहा:
अपने बेटे को मेरे पास लाओ। यहां प्रभु और आसुरी शक्तियों के बीच घातक संघर्ष स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। जब लड़का आ रहा था, तब दुष्टात्मा ने यीशु को देखा, और तुरन्त उसे मरोड़कर भूमि पर पटक दिया। वह भूमि पर गिर पड़ा और इधर-उधर लुढ़क गया, उसके मुँह से झाग निकलने लगा (मती १७:१७; मरकुस ९:१९-२०; लूका ९:४१-

Gd – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया
मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३a | 4

४२ए)। यह कितना दुखद दृश्य था!

मसीहा ने लड़के के पिता से पूछा: वह कितने समय से ऐसा है? बचपन से ही उन्होंने उत्तर दिया। इसने अक्सर उसे मारने के लिए आग या पानी में फेंक दिया है। जब पिता अपने बेटे को येशुआ के प्रेरितों के पास लाने के लिए घर से निकला, तो उसे स्पष्ट रूप से विश्वास था कि उसका बेटा ठीक हो सकता है। लेकिन अब वह इतना निश्चित नहीं था और आशा से बोला: परन्तु यदि तुम कुछ कर सकते हो, तो हम पर दया करो और हमारी सहायता करो (मरकुस ९:२१-२२)। उन्हें प्रभु की क्षमता पर संदेह नहीं था, बल्कि उनकी इच्छा पर संदेह था। क्या वह अपने शिष्यों से अधिक शक्तिशाली था? वह जल्द ही पता लगा लेगा.

अगर मैं कुछ कर सकूं? यीशु ने तुरंत प्रश्न को पलट दिया। प्रश्न यह नहीं था कि जिस सृष्टिकर्ता ने संसार को अस्तित्व में लाने की बात कही, वह कुछ भी कर सकता है या नहीं। सवाल यह था कि क्या पिता को इतना विश्वास था! जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है। मसीह की अस्वीकृति के बाद उनके मंत्रालय में बदलाव के कारण, येशुआ को विश्वास के प्रदर्शन की आवश्यकता थी। लड़के के पिता ने तुरंत कहा: मुझे विश्वास है; मैं विश्वास करना चाहता हूँ। लेकिन उन्होंने माना कि उनका विश्वास पूर्णता से कोसों दूर था। यह अभी भी अविश्वास के साथ मिश्रित था। तो उसने विनती की, कृपया मेरे अविश्वास पर काबू पाने में मेरी मदद करें (मरकुस ९:२३-२४)! पिता के कथन उतने विरोधाभासी नहीं हैं जितने लग सकते हैं क्योंकि हम सभी ने समय-समय पर अपने विश्वास की गहराई के बारे में प्रश्नों का अनुभव किया है।

यीशु ने देखा कि एक भीड़ घटनास्थल की ओर दौड़ रही है। घटनास्थल की ओर भीड़ के दौड़ने का उल्लेख मरकुस ९:१४ को देखते हुए अजीब लगता है, जिसमें कहा गया है कि एक बड़ी भीड़ पहले से ही वहां मौजूद थी। बड़ी भीड़ के जाने का कोई जिक्र नहीं किया गया है इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि यहां की भीड़ पहली भीड़ के अतिरिक्त है।

Gd – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया
मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३a | 5



एक बार फिर, मसीह की अस्वीकृति के बाद उसके मंत्रालय में
बदलाव के कारण, चमत्कारों का उद्देश्य जनता को यह विश्वास दिलाना नहीं था कि वह मसीहा था। इसलिए यीशु ने भीड़ के आने से पहले ही यह चमत्कार कर दिखाया। उस ने गूंगी और बहरी आत्मा को यह कहकर डांटा, कि मैं तुझे आज्ञा देता हूं, उस में से निकल जाओ, और फिर कभी उस में प्रवेश न करना। राक्षस को एहसास हुआ कि उसे बाहर निकाला जा रहा है और उसने लड़के को नष्ट करने का आखिरी प्रयास किया; राक्षस चिल्लाया, उसे ज़ोर से मरोड़ा और उसके पास से बाहर आ गया। उस आदमी का बेटा उसी क्षण ठीक हो गया (मती १७:१८; मरकुस ९:२५-२६ए; लूका ९:४२बी)।

मरकुस के वृत्तांत में पुनरुत्थान की प्रतिध्वनि भी शामिल है। लड़का इतना अधिक लाश जैसा लग रहा था कि कई लोगों को लगा कि वह मर गया है। परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उसे अपने पैरों पर खड़ा कर दिया, और जैसे ही वह खड़ा हुआ, प्रभु ने लड़के को उसके पिता को वापस दे दिया। और वे सभी परमेश्वर की महानता पर चकित थे (मरकुस ९:२६बी-२७: लूका ९:४३)। इस उपचार को येशुआ के सभी अनुयायियों के लिए उपचार की गारंटी के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। हम ईश्वर की भूमिका नहीं निभा सकते और यह मांग नहीं कर सकते कि वह हमें ठीक करें क्योंकि मसीहा ने स्वयं अपनी बुलाहट को पूरा करने के लिए बहुत दर्द और पीड़ा सहन की। हालाँकि, इस शारीरिक स्थिति और दुष्टात्मा के कब्जे का उपचार इस विशिष्ट मामले में मसीह की शक्ति का एक सुंदर उदाहरण है।

उसके प्रेरित चकित और भ्रमित दोनों रहे होंगे, क्योंकि यीशु के घर के अंदर जाने के बाद, वे अकेले में उसके पास आए और पूछा: हम दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल सके? ईसा मसीह दो बुनियादी कारण बताते हैं। सबसे पहले, उन्होंने उत्तर दिया: क्योंकि आपके पास बहुत कम विश्वास है। जाहिरा तौर पर उन्होंने उन्हें दी गई शक्ति ले ली थी या यह विश्वास कर लिया था कि यह उनमें निहित है। इसलिए वे अब इसके लिए प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर पर निर्भर नहीं रहे, और उनकी विफलता ने उनकी

Gd – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया
मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३a | 6

प्रार्थना की कमी को दर्शाया। ध्यान दें कि ये प्रेरित थे जिनमें विश्वास की कमी थी – मनुष्य में नहीं। दूसरा कारण यह था कि उस प्रकार का दुष्टात्मा केवल प्रार्थना और उपवास से ही बाहर आ सकता था (मती १७:१९-२०ए; मरकुस ९:२८-२९ एनकेजेवी)।

जब यीशु ने कहा: इस तरह. . . केवल प्रार्थना से ही बाहर आ सकता है, वह किस प्रकार की बात कर रहा था? यह एक आत्मा थी जिसने लड़के से उसकी वाणी छीन ली थी (मरकुस ९:१७)। दूसरे शब्दों में, यह एक मूक दानव था (देखें Ek– यह राक्षसों के राजकुमार बील्ज़ेबब द्वारा ही किया जाता है, कि यह साथी राक्षसों को बाहर निकालता है)! यीशु ने सत्यापित किया कि मूक दुष्टात्मा को बाहर निकालना बहुत अलग था। फरीसी कई प्रकार के राक्षसों को बाहर निकाल सकते थे, लेकिन मूक राक्षस को नहीं! बाद में, महान श्वेत सिंहासन के फैसले में उनके जैसे लोग कहेंगे: प्रभु, प्रभु, क्या हमने आपके नाम पर राक्षसों को नहीं निकाला (मती ७:२२)? अब तक शिष्यों केवल यीशु के नाम पर राक्षसों को बाहर निकालता था। बारह को उपयोग करने के लिए यही एकमात्र तरीका आवश्यक था। लेकिन एक मूक राक्षस अलग था। वे इसे यूँ ही बाहर नहीं निकाल सकते थे। . . उन्हें इसकी प्रार्थना करनी पड़ी।

अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए, यीशु ने राज्य का एक अद्भुत सत्य साझा किया। ईश्वर की कुछ महान शक्ति का अनुभव करने के लिए, किसी व्यक्ति को एक महान आध्यात्मिक दिग्गज होने की आवश्यकता नहीं है। आश्चर्य की बात है, उन्होंने आगे कहा: मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि तुम्हारे पास राई के दाने जितना छोटा विश्वास है, तो तुम इस पहाड़ से कह सकते हो, “यहाँ से वहाँ चले जाओ,” और वह चला जाएगा। आपके लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा (मती १७:२०बी)। जब भी पर्वत शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है तो वह सदैव किसी राजा, राज्य या सिंहासन का प्रतीक होता है। जिस राज्य का उन्होंने अभी सामना किया वह शैतान का राज्य था।

यह पाठ आज हमारे लिए उतना ही स्पष्ट होना चाहिए जितना तब उसके प्रेरितों के लिए था। हमारी ओर से थोड़े से विश्वास के साथ भी, परमेश्वर महान कार्य पूरा कर सकते हैं। इस मुठभेड़ के संदर्भ में शिक्षण और भी अधिक प्रभावशाली था, क्योंकि तीन शिष्यों अभी-अभी इज़राइल के सबसे ऊंचे पर्वत, माउंट हर्मन से उतरे थे। आध्यात्मिक आस्था के सबसे छोटे बीज से भी इस पर्वत (प्रतिद्वंद्वी का साम्राज्य) को संभावित रूप से हिलाया जा सकता है।

येशुआ ने इस बात पर जोर देकर संभावनाओं का विस्तार किया कि जिनके पास ऐसा विश्वास है उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा। हालाँकि, एक बार फिर, हमें किसी परिच्छेद में संपूर्ण बाइबल के संदर्भ में दी गई अनुमति से अधिक व्याख्या करने से बचना चाहिए। यह कथन स्वयं ईश्वर के आदेश पर अपने मूर्खतापूर्ण विचारों को थोपने का लाइसेंस नहीं है। एक अन्य संदर्भ में यीशु ने कहा: तुम मुझसे मेरे नाम पर कुछ भी मांग सकते हो, और मैं उसे करूंगा (यूहन्ना १४:१४)। यह हमारी अपनी

Gd – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रसित एक लड़के को ठीक किया
मत्ती १७:१४-२०; मरकुस ९:१४-२९; लूका ९:३७-४३a | 7

इच्छाओं के लिए एक खाली चेक नहीं है, लेकिन उत्तर आएंगे, यह मानते हुए कि हम इसे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मांगते हैं – जैसा कि यीशु ने स्वयं हमारे लिए आदर्श बनाया जब उन्होंने प्रार्थना की: पिता, यदि आप इच्छुक हैं, तो इस कप को मेरे पास से हटा दें; तौभी मेरी नहीं, परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो (लूका २२:४२ एन ए एस बी)। फिर भी, सरसों के बीज का वादा सुंदर और अद्भुत है क्योंकि यह हमें सिखाता है कि अगर हम मसीहा की शक्ति पर भरोसा करते हैं और अपने जीवन में उसकी इच्छा के प्रति समर्पण करते हैं तो अविश्वसनीय चीजें संभव हैं। यहां हमारे लिए दो सबक हैं:

सबसे पहले, यीशु न केवल क्रूस का सामना करने के लिए तैयार थे, वह आम लोगों की सामान्य समस्याओं का सामना करने के लिए भी तैयार थे। यह मानव स्वभाव की विशेषता है कि हम अपने जीवन में बड़े संकट के क्षणों का सम्मान और सम्मान के साथ सामना कर सकते हैं, लेकिन हम रोजमर्रा की जिंदगी की नियमित मांगों को हमें परेशान करने, विचलित करने और परेशान करने की अनुमति देते हैं। हम एक निश्चित वीरता के साथ जीवन के विनाशकारी आघातों का सामना कर सकते हैं, लेकिन हम छोटी-छोटी चुभन को हमें परेशान करने की अनुमति देते हैं। हममें से कई लोग अपने परिवार में बड़ी क्षति का सामना शांति से कर सकते हैं और फिर भी अगर किसी रेस्तरां में हमारी सेवा खराब हो या बस देर से हो तो अपना आपा खो देते हैं। यीशु के बारे में आश्चर्यजनक बात यह थी कि वह शांति से क्रूस का सामना कर सकते थे, और साथ ही जीवन की दिन-प्रतिदिन की आपात स्थितियों से भी शांति से निपट सकते थे। लेकिन उन्होंने परमेश्वर को शीशे के पीछे नहीं रखा, हममें से कई लोगों की तरह सिर्फ आपात स्थितियों के लिए आरक्षित रखा। नहीं, वह परमपिता परमेश्वर के साथ जीवन के दैनिक पथों पर चला।

दूसरा, मसीहा दुनिया को बचाने के लिए दुनिया में आया, और फिर भी, वह एक व्यक्ति की मदद करने के लिए अपना पूरा और अविभाजित ध्यान दे सकता था। एकल, व्यक्तिगत, अप्रिय पापियों से प्रेम करने की तुलना में पूरी दुनिया के लिए प्रेम के सुसमाचार का प्रचार करना बहुत आसान है। व्यापक मानवीय कारणों के प्रति स्नेह से भर जाना आसान है, और किसी जरूरतमंद व्यक्ति की मदद न करने का कोई बहाना ढूंढना भी उतना ही आसान है। येशुआ के पास खुद को हर उस व्यक्ति को पूरी तरह से समर्पित करने की क्षमता थी जिसके साथ वह उस समय हुआ था।887

क्या आपके जीवन में कोई बोझ है? क्या आपका कोई बच्चा आध्यात्मिक रूप से बीमार है? शारीरिक रूप से बीमार जीवनसाथी? भावनात्मक रूप से बीमार दोस्त? क्या आपको आर्थिक समस्या है? क्या इस जीवन की परीक्षाएँ कभी-कभी इतनी भारी लगती हैं कि आपको पता ही नहीं चलता कि आप किसी और दिन जा सकते हैं या नहीं? आपके जीवन में चाहे जो भी समस्याएँ हों, आप यीशु को यह कहते हुए सुन सकते हैं: अपना [बोझ] मेरे पास लाओ।